[श्री गिरिराज किशोर कपूर]

शक्तिशाली है कि जिस की कृपा-कटाक्ष मात्र से संसार की उत्पत्ति, पालन और प्रलय आदि सब कुछ हो जाता है। आज हम उसको भूल रहे हैं। जिस देश में, जिस संस्कृति में हम पले हुये हैं, उसकी मर्यादाओं को हम छोड़ रहे हैं। दुख का कारण यही है।

यह तो बड़ा अच्छा हुआ कि आज के युग में हमारे भाई को ऐसा विचार उत्पन्न हुआ। अगर कुछ अर्सा पहले ही यह विचार आ जाते, तो इस देश को कृष्ण नहीं मिल सकता था, इस देश को अरविन्द नहीं मिल सकता था, इस देश को रविन्द्रनाथ टैगोर नहीं मिल सकता था, इस देश को सुभाष बाबू नहीं मिल सकता था, इस देश को भगत सिंह नहीं मिल सकता था, इस देश को बहुत से हमारे भाई जो यहां बैठे हैं, वे भी नहीं मिल सकते थे, और बहुत सी बहनें भी जो यहां बैठी हैं व नहीं मिल सकती थीं।

श्री महावीर प्रसाद भार्गव (उत्तर प्रदेश) : कपूर साहब, आप मिलते या नहीं?

श्री गिरिराज किशोर कपूर : मैं भी नहीं मिलता क्योंकि मैं अपने बाप का छठा लड़का हूं। आखिर, यह सब क्यों हो रहा है? क्योंकि हमने रति की गति को नहीं देखा। हमने यह नहीं देखा कि स संसार के जीवों में मनुष्य नामी जीव कितने हैं। एक पर सेंट भी नहीं हैं। जब ईश्वर ९९ पर सेंट को रिजस्ट करता रहता है, तो क्या वह १ परसेंट मनुष्यों को रिजस्ट नहीं कर सकता। मगर आज उसकी शक्ति पर हमें विश्वास नहीं है। आज हमें अपनी बुद्धि पर विश्वास है। मगर मैं बता देना चाहता हूं कि :

थके हैं लाखों ज्ञानी ध्यानी,
न कोई उसको निहार पाया।
अपार माया है प्यारे भगवन्,
कभी किसी ने न पार पाया।

मगर पाया किसने? जिसने रति की गति को समझा और उसे समझने के लिये हमें दुनिया की स खुली किताब के एक-एक पन्ने को पढ़ना पड़ेगा।

हम मनुष्य हैं। संसार में और भी मनुष्य हैं। हमारी संस्कृति कहती है कि कर्मों के अनुसार जीवों का जन्म होता है। अब हम अपनी किताब को पढ़ें। वह भी जीव है जो सुबह ही सुबह मैले की टोकरी सिर पर उठाता है। वे भी मनुष्य हैं जो अंधे हैं, लंगड़े हैं, काने हैं। वे भी मनुष्य हैं जिन के रोम-रोम में कोढ़ बलबला रहा है और कीड़े पड़ रहे हैं। आखिर, हमारे कर्म बहुत अच्छे होंगे। कर्म में हमारा विश्वास था। धर्म में हमारा विश्वास था। संस्कृति पर हमारा विश्वास था। हमारा विश्वास था कि एक ईश्वर है, उसके नाम अनेक हो सकते हैं, उसके रूप अनेक हो सकते हैं, उसके मंदिर अनेक हो सकते हैं, उसके मंदिरों में प्रतिमाएं अनेक हो सकती हैं, बिना प्रतिमा के मंदिर हो सकते हैं, और हमारे पढ़ने के ग्रंथ अलग अलग हो सकते हैं।

THE DEPUTY CHAIRMAN: You may continue later. Minister of Parliamentary Affairs.

ANNOUNCEMENT *RE.* GOVERNMENT BUSINESS

THE MINISTER OF COMMUNICATIONS AND PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI SATYA NARAYAN SINHA): Madam, wih your permission, I rise to announce that Government Business in this House during the week commencing 21st December, 1964, will consist of:

(1) Consideration and passing of the following Bills, as passed by Lok Sabha:

The Payment of Wages (Amendment) Bill, 1964.

The Foreign Exchange Regulation (Amendment) Bill, 1964.

The Standards of Weights and Measures (Amendment) Bill, 1964.

(2) Consideration and return of the following Bills, as passed by Lok Sabha:

The Appropriation (Railways) No. 3 Bill, 1964.

The Indian Tariff (Amendment) Bill, 1964.

(3) Consideration of a motion for concurrence in the recommendation of the Lok Sabha for reference of the Companies (Second Amendment) Bill, 1964, to a Joint Committee.

(4) Consideration and passing of the Representation of the People (Second Amendment) Bill, 1964, as passed by Lok Sabha.

(5) Discussion on the present international situation and the policy of the Government of India in relation thereto on a motion to be moved by the Minister of External Affairs on Tuesday, the 22nd December, 1964, after disposal of Questions.

(6) Discussion on the Report of the Commission of Inquiry presided over by Shri S. R. Das, constituted under the Ministry of Home Affairs Notification S. O. No. 3109, dated the 1st November, 1963, to inquire into and report on certain allegations made against Sardar Partap Singh Kairon, the then Chief Minister of Punjab, laid on the Table of the Rajya Sabha on the 7th September, 1964, on Monday, the 21st December, 1964, at 4 P.M.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The House stands adjourned till 2:30 P.M.

The House then adjourned for lunch at one of the clock.

The House reassembled after lunch at half past two of the clock, The VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI TARA RAMCHANDRA SATHE) in the Chair.

RESOLUTION *RE.* LEGISLATION, TO LIMIT THE FAMILY—*Continued*

श्री गिरिराज किशोर कपूर : उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं कह रहा था कि हमको अपनी भारतीय संस्कृति की तरफ देखना चाहिए । हमारी भारतीय संस्कृति यह विश्वास करती है कि ईश्वर एक है उस के नाम अनेक हो सकते हैं, उसकी मूर्तियां अनेक हो सकती हैं, उसके मन्दिर अनेक हो सकते है, मन्दिरों के नाम अलग अलग हो सकते हैं, बिना मूर्ति के मन्दिर हो सकते हैं, हमारे पूजा करने के ग्रन्थ अलग-अलग हो सकते है, ग्रन्थों की भाषा अलग-अलग हो सकत है, हमारे पूजा करने के, इबादत करने के तरीके अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन भारतवासी यह विश्वास रखते हैं कि ईश्वर एक है और यह सब उसकी ही पूजा है । जब हमारा यह विश्वास है तब हम अपने शास्त्रों की तरफ जाते हैं । श्रुतियां चिल्ला चिल्ला कर कहती है :

अजो नित्यः शुद्धो निखिलमति साक्षी सदमलो विभूः सर्वज्ञो, योऽनतिशय सुखश्चिद्घनवपु । स्वधर्म्मार्थं भूमौ धरति खलु देहान् बहुविधां । स्तथागो भू देवाः स्वजन सुर रक्षा धृतमतिः ।।

मैं दुनिया को पैदा करता हूं, बनाता हूं, मैं पालन करता हूं, मैं संहार करता हूं और जब जब मानव मानवता को छोड़ कर सम्प्रदायवाद में पड़ा करता है तब तब मैं ही अवतार लेता हूं, कभी राम के रूप में लेता हूं, कभी कृष्ण के रूप में लेता हूं, कभी ईसा के रूप में लेता हूं, कभी मुहम्मद के रूप में लेता हूं, कभी शंकराचार्य के रूप में लेता हूं । कभी दयानन्द के रूप में लेता हूं, कभी गांधी के रूप में लेता हूं । ये सब मेरी आत्मा हैं, मेरे ही प्रकाश से जगत को ठीक करने के लिए अवतार लेते हैं । मैं ही अवतार लेता हूं । जब इतना सत्य दिग्दर्शन दिया हुआ है फिर क्या जरुरत है इतनी चिंता करने की । हमारे कामन हाल में हमारे नेताओं की तस्वीरें लगी हुई हैं । हम उन से मार्ग दर्शन लें । इन में से किसी का स्टेरिलाइजेशन हुआ ? नहीं हुआ । क्यों नहीं हुआ ? कहेंगे कि जरूरत नहीं थी ।

आबादी को कम करनें की जरूरत आज क्यों जाहिर हुई ? क्योंकि हम अपना कर्म